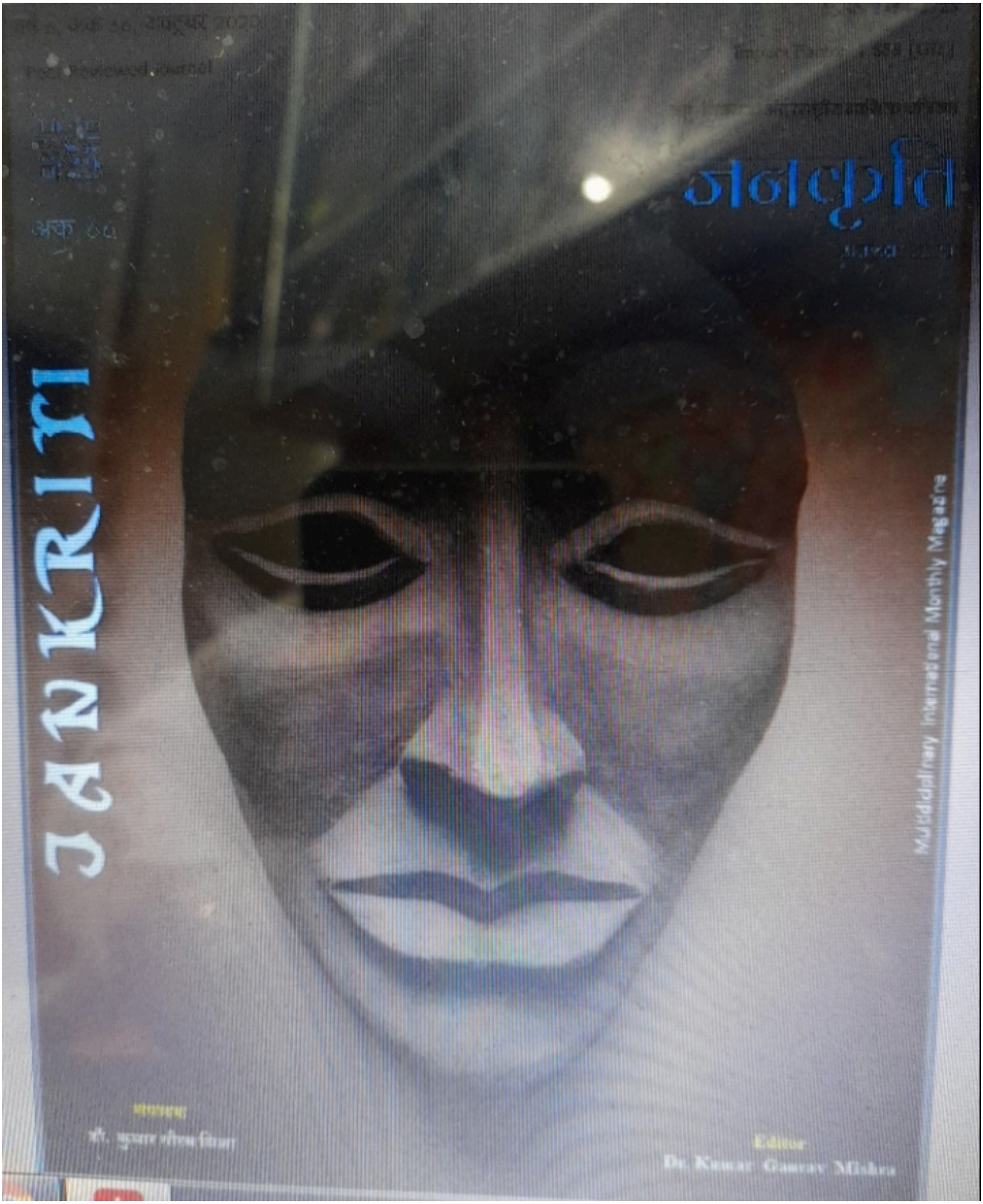
JANKRITI
जनकृति
Multidisciplinary International Monthly Magazine

Editorial Board Members/Reviewer सम्पादकीय परिषद सदस्य/समीक्षक

Chief Editor

Dr. Kumar Gaurav Mishra
Designation- Assistant Professor,
Address- Department of Hindi, Central University of Jharkhand,
Brambe, Ranchi, Jharkhand
Email: kumar.mishra00@gmail.com
Phone: +918805408656

Associate Editor

Dr Puneet Bisaria
Associate Professor
Department of Hindi
Bundelkhand University,
Kanpur Road, Jhansi
Uttar Pradesh,India
284128
Email- puneetbisaria8@gmail.com
Phone- +91945003787, +91912993645

Dr. Harish Arora
Sr. Assistant Professor,
Dept. of Hindi, PGDAV College (E),
University of Delhi, Nehru Nagar, New Delhi
Email: drharisharora@gmail.com
Mobile: +91-8800660646

Editorial Board Members/Reviewer

Prof. Kapil Kumar
Director,Indira Gandhi Centre for Freedom Struggle Studies
& Chairperson, Faculty of History
Indira Gandhi National Open University(IGNOU, Delhi
E-mail: profkapilk@gmail.com
Mobile: 8826158434, 9910058434

Prof. Jitendra Kumar Srivastava
Professor, School of Humanities & Registrar
Indira Gandhi National Open University (IGNOU), Maidan Garhi,
New Delhi – 110068
Email: registrar@ignou.ac.in
Phone: 011-29532098

Dr. Nam Dev
Associate Prof.
Department of Hindi
Kirori Mal College
University of Delhi, Delhi – 110007
Email: namdevkmc_7@rediffmail.com
Mobile: 9810526252

Dr. Pragya
Associate Prof.,
Department of Hindi
Kirori Mal College
University of Delhi, Delhi – 110007
Email: rakeshpragya@gmail.com
Mobile: 9811585399

Dr. Rupa Singh
Associate professor
Babu Shobha Ram Government Arts College,
Alwar (Rajasthan)
Email:
Mobile: 9982496066

Dr. Munna Kumar Pandey
Assistant Professor
Hindi Department
Satywati College
University of Delhi, Delhi – 110007
Email: mkpandey@satyawati.du.ac.in
Mobile: 09013729887

Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 66, October 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय
(विशेषज्ञ सम
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF
www.jankrit
वर्ष 6, अंक 66, अक्टूबर

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
25.	अस्मिता एवं अस्मितामूलक-विमर्श की अवधारणा एवं सिद्धांत: पीयूष राज	183-190
26.	हिंदी के प्रथम आधुनिक कवि : एक विचार- डॉ. मीनाक्षी	191-195
27.	देश की विडंबनाओं का 'जुलूस': डॉ. धनंजय कुमार साव	196-204
28.	आतंक एवं विस्थापन की मार्मिक पीड़ा को बयां करता उपन्यास: शिगाफ: डॉ. कुमारी रीना	205-212
29.	नामवर सिंह के काव्य विचारों में नए प्रतिमानों का अनुशीलन: डॉ॰ सुनील कुमार मिश्रा	213-216
30.	मिथक इतिहास और वर्तमान: डॉ. नेहा कल्याणी	217-221
31.	राष्ट्र की अवधारणा और सांस्कृतिक पहचान: अरुणिमा	222-228
32.	रामकथा विषयक निबंधों का अनुशीलन: डॉ. राजकुमार व्यास	229-234
33.	स्वप्न और संघर्ष के स्वर डॉ. रवि रंजन	235-245
34.	रिश्तों के बंधन में स्वच्छंदता का स्वर : 'सपनों की होम डिलीवरी': श्रुति पाण्डेय	246-249
35.	साहित्य के परिप्रेक्ष्य में 'तुलना' के घटक: धर्मेन्द्र प्रताप सिंह	250-252
36.	सामाजिक जागृति तथा शोषण से मुक्ति के लिए प्रतिबंध संजीव जी का कथा साहित्य ('अपराध' के संदर्भ में): डॉ. कुमारी उर्वशी	253-262
37.	आदिवासी उपन्यासों के आईने में स्त्री जीवन: डॉ. उपमा शर्मा	263-268
38.	आधुनिक युगबोध और गुरु नानक वाणी - डॉ. शोभा कौर	269-276
39.	रंग-बिरंगे दोहों का पुष्पगुच्छ : बिहारी सतसई: अमरेन्द्र प्रताप सिंह	277-282
40.	शैलेष मटियानी की कहानियों में अभिव्यक पर्वतीय जीवन संघर्ष के विविध आयम: ऋतु	283-290
41.	कृष्ण भक्ति की सिरताज 'ताज'- सत्रहवीं शताब्दी की स्त्री कृष्ण भक्त लेखिका: ज्योति	291-296
42.	समकालीन कविता का सरोकार: डॉ. रामचरण पांडेय	297-302
43.	प्रमुख स्मृतियों में मानव कल्याण की अवधारणा: आलोक कुमार झा	303-305
44.	सूफी काव्य में भारतीय संस्कृति तथा लोक जीवन: विजयश्री सातपालकर	306-308
	साहित्यिक विधाएँ	
45.	साहित्यिक विधाएँ: कविता- सुशांत सुप्रिय, मनीष सिंह	309-311
46.	साहित्यिक विधाएँ: कहानी- बाढ़ और प्यार: आकांक्षा सक्सेना	312-318
47.	साहित्यिक विधाएँ: लघुकथा- अधिनायक: सीताराम गुप्ता	319-320

Multidisciplinary International Magazine
(Peer-Reviewed)
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF 1.888
www.jankriti.com
Volume 6, Issue 66, October 2020

JANKRITI जनकृति

बहु-विषयक अंतरराष्ट्रीय
(विशेषज्ञ
ISSN: 2454-2725, Impact Factor: GIF
www.jankriti
वर्ष 6, अंक 66, अक्टूबर

आधुनिक युगबोध और गुरु नानक वाणी

डॉ. शोभा कौर
असिस्टेंट प्रोफेसर
किरोड़ीमल महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

सारांश

आधुनिकता की कुछ मुख्य प्रवृत्तियों में प्रश्नाकुलता, राजनैतिक सजगता, आर्थिक जागृति, मानवीय गुणों में विश्वास आदि प्रमुख हैं. इस दृष्टि से देखे तो गुरु नानकदेव जी की वाणी हर युग में आधुनिक है. उन्होंने अपने समय की सभी कुरीतियों का विरोध किया एवं सभी जड़ मान्यताओं पर प्रश्न चिह्न लगाए. अपने समकालीन सभी संतों की अपेक्षा गुरु नानकदेव जी में राजनैतिक सजगता सर्वाधिक है. आर्थिक दृष्टि से उन्होंने न केवल उपदेश दिए अपितु स्वयं भी व्यापार और कृषि के क्षेत्र में सक्रिय रह कर एक मिसाल कायम की. मनुष्य को उसकी बुराइयों के प्रति लगातार सचेत करते हुए उन्होने उसे अपने कर्मों में सुधार को प्रेरित किया. उनकी वाणी में जहाँ एक ओर तत्कालीन धर्म, दर्शन, अध्यात्म, राजनीति, इतिहास, अर्थनीति और समाज संरचना का यथार्थ विद्यमान है वहीं दूसरी ओर उसमें अपने समय के महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रश्नचिह्न हैं।

बीज शब्द

आधुनिकता, आध्यात्म, चेतना, दृष्टि, मध्यकाल। लोकभावना

आमुख

गुरु नानक वाणी में आधुनिक चेतना पर बात करने से पूर्व हमें जानना होगा कि आधुनिक चेतना क्या है ? आधुनिकता के विषय में यह पूर्वाग्रह क्यों देखने को मिलता है कि, इसकी शुरुआत 1800 के आसपास औद्योगिक क्रान्ति के साथ हुई ? आधुनिक कहते ही उससे पूर्व के साहित्य को हेय मानने की प्रवृत्ति क्यों मौजूद है ? किसी साहित्यकार के मूल्यांकन के लिए उसे प्राचीन, मध्य और आधुनिक में बाँट कर देखना कहाँ तक उचित है ? क्या प्राचीन, मध्य और आधुनिक मात्र प्रवृत्तियां नहीं हैं जो कभी भी किसी भी व्यक्ति और स्थान में हो सकती हैं ? क्या आधुनिकता का एक खतरा ज्ञान का स्थानांतरण सूचना-तन्त्र नहीं हो गया और क्या इसी अर्थ में प्रत्येक आधुनिकता अनुकरणीय हो सकती है? क्या वर्तमान में धर्म हमारी जातीय स्मृति का जीवंत हिस्सा है या भौतिक चीज़ है? क्या इस सन्दर्भ में आधुनिकता ज्यादा खोखली चीज़ नहीं बन गई है ?

गुरु नानकदेव जी ने जिस प्रकार अपने समय की नब्ज पर ऊँगली रखते हुए अपने समाज को झकझोर कर जगाया है , क्या उनकी चेतना को किसी कटघरे में बांधा जा सकता ? उन्होंने अपने समय की राजनैतिक परिस्थितिओं में क्या हस्तक्षेप किया ? क्या गुरु नानकदेव जी समाज की आर्थिक चेतना में कोई क्रांतिकारी परिवर्तन कर पाए हैं? वे समाज के प्रति किस प्रकार का उत्तरदायित्व निभाते हैं? क्या उन्होंने अपने समय की धार्मिक मान्यताओं को ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया या उसमें कोई परिवर्तन भी किया ? जिस समय भारत की राजनैतिक व्यवस्था मुगलों के अधीन थी उस समय उसी के समानांतर एक नए सम्प्रदाय का अविर्भाव कैसे हो जाता है ? गुरु जी के सिद्धांतों में ऐसी कौन सी सामाजिक सच्चाईयां हैं जो लोगों को पीढ़ीगत ज्ञान एवं अनुशासन का संदेश देती हैं?

आधुनिकता की कुछ मुख्य प्रवृत्तियों में प्रश्नाकुलता, राजनैतिक सजगता, आर्थिक जागृति, मानवीय गुणों में